JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय की वर्तमान स्थिति और छात्रों की रुझान: एक क्षेत्रीय अध्ययन

अनुसंधानार्थी : पूनम कटियार,
शिक्षा संकाय, मेजर एस. डी. सिंह विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत.
अनुसंधान पर्यवेक्षक : डॉ. अनुराग सिंह,
सहयोगी प्रोफेसर, मेजर एस. डी. सिंह विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत.

सारांश (Abstract):

भारत में "शिक्षा" विषय का ऐतिहासिक महत्व रहा है, परंतु वर्तमान में विश्वविद्यालयों में इस विषय के प्रति छात्रों की रुचि में लगातार गिरावट देखी जा रही है। यह शोध लेख "विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय की वर्तमान स्थिति और छात्रों की रुझान: एक क्षेत्रीय अध्ययन" के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के कुछ विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय की लोकप्रियता, छात्रों की नामांकन प्रवृत्तियों, और करियर संभावनाओं के दृष्टिकोण से एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि शिक्षा विषय को लेकर छात्रों में वर्तमान में क्या दृष्टिकोण है, वे इसे क्यों चुनते या नकारते हैं, तथा विश्वविद्यालय किस प्रकार इस विषय को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए प्रयासरत हैं। इसके अतिरिक्त यह लेख शिक्षा विषय के करियर पर प्रभाव, पाठ्यक्रम संरचना, और नई शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव की भी पड़ताल करता है।

शोध पद्धति के अंतर्गत 150 छात्रों और 15 शिक्षकों से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया। इसके लिए प्रश्नावली, साक्षात्कार और संबंधित शैक्षणिक दस्तावेजों का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय उपकरणों के माध्यम से नामांकन दर, छात्रों की रुचियों, और उनके भविष्य की आशाओं का विश्लेषण किया गया।

प्रमुख निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि अधिकांश छात्र शिक्षा विषय को अंतिम विकल्प के रूप में चुनते हैं, जिसके पीछे करियर अनिश्चितता, सामाजिक सम्मान में कमी, और विषय की 'सहायक' छवि प्रमुख कारण हैं। हालांकि, ऐसे भी छात्र मिले जिन्होंने शिक्षा विषय को नैतिक, शोध आधारित और समाजोपयोगी समझकर चुना। शिक्षकों का मत है कि शिक्षा विषय में सुधार, डिजिटल एकीकरण और व्यावसायिक प्रशिक्षण इसकी स्थिति को सशक्त बना सकते हैं।

यह अध्ययन सुझाव देता है कि विश्वविद्यालयों को शिक्षा विषय को नई दृष्टि और आधुनिक कौशल के साथ पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है। नीति निर्माताओं को भी इस विषय के प्रति समाज में विश्वास बहाल करने हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए।

Keywords: शिक्षा विषय, छात्रों की रुचि, नामांकन प्रवृत्ति, विश्वविद्यालय, करियर विकल्प, NEP 2020, शिक्षक शिक्षा, क्षेत्रीय अध्ययन.

प्रस्तावना (Introduction)

1. भारत में शिक्षा विषय का ऐतिहासिक महत्व:

भारत में शिक्षा का इतिहास वैदिक युग से आरंभ होता है, जहाँ गुरुकुलों में शिक्षा प्रदान की जाती थी। शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों का संवाहक मानी जाती थी। मध्यकाल और ब्रिटिश काल में शिक्षा प्रणाली में अनेक परिवर्तन हुए। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी, और यह विषय विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक अनुशासन के रूप में स्थापित हुआ। शिक्षा विषय ने शिक्षक-प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम निर्माण और नीति-निर्माण जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. आधुनिक विश्वविद्यालयीय ढाँचे में इसकी स्थिति:

आज शिक्षा विषय अधिकांश विश्वविद्यालयों और बी.एड. /एम.एड. कॉलेजों में पढ़ाया जा रहा है, किंतु इसकी स्थिति अन्य विषयों की तुलना में कमजोर प्रतीत होती है। छात्रों की प्राथमिक पसंद में यह विषय शामिल नहीं होता। प्रवेश संख्या में कमी, विषय को 'सहायक' या 'कम प्रतिस्पर्धी' मानने की धारणा, और रोजगार की सीमित संभावनाएँ इसे चुनौतियों से घेरती हैं। इसके बावजूद यह विषय शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक नवाचार, और नीति सुधार में अनिवार्य भूमिका निभा रहा है।

3. क्षेत्रीय/राज्य स्तर पर शिक्षा विषय की गिरती लोकप्रियता:
उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में शिक्षा विषय में छात्रों की नामांकन दर में लगातार गिरावट देखी जा रही है। कई विश्वविद्यालयों में सीटें खाली रह जाती हैं, विशेषकर स्नातकोत्तर स्तर पर। यह स्थिति शिक्षा विषय की सामाजिक छवि, करियर अवसरों की अस्पष्टता, और सरकारी नीतियों में सीमित प्रोत्साहन से प्रभावित है। निजी कॉलेजों में इस विषय को केवल डिग्री अर्जन का माध्यम मान लिया गया है, जिससे इसकी गुणवत्ता भी प्रभावित हुई है।

4. NEP 2020 के संदर्भ में शिक्षा विषय का पुनर्मूल्यांकन:
नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा विषय को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता पर बल दिया है। एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP), डिजिटल लर्निंग, शोध उन्मुख प्रशिक्षण, और मूल्याधारित शिक्षा के माध्यम से इस विषय को पुनः केंद्रीय भूमिका में लाया गया है। नीति यह संकेत देती है कि यदि शिक्षा विषय को गुणवत्ता, अनुसंधान और बहु-विषयकता से जोड़ा जाए, तो यह 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप पुनः लोकप्रिय और प्रभावशाली बन सकता है।

3. अध्ययन की आवश्यकता (Need of the Study)

1. छात्रों में शिक्षा विषय के प्रति घटती रुचि की पड़ताल:
पिछले कुछ वर्षों में विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षा विषय के प्रति छात्रों की रुचि में स्पष्ट गिरावट देखी गई है। उदाहरणस्वरूप, उत्तर प्रदेश के कई विश्वविद्यालयों में एम.ए. (शिक्षा) और बी.एड. पाठ्यक्रमों में नामांकन की दर में 20–30% की कमी दर्ज की गई है (स्रोत: UGC Enrollment Reports, 2021–2023) । यह स्थिति न केवल विषय की प्रतिष्ठा को प्रभावित करती है, बल्कि भावी शिक्षक-शक्ति की गुणवत्ता और संख्या पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा करती है।
इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने की आवश्यकता है कि –

a) क्या यह गिरावट करियर के सीमित विकल्पों से जुड़ी है?
b) या छात्रों के दृष्टिकोण में विषय की उपयोगिता को लेकर भ्रम की स्थिति है?
c) क्या तकनीकी या व्यवसायिक विषयों की बढ़ती लोकप्रियता इसका प्रमुख कारण है?

2. विषय की सामाजिक-आर्थिक उपयोगिता की समीक्षा:
शिक्षा विषय को लंबे समय तक केवल 'शिक्षक निर्माण' के रूप में देखा गया, जबकि यह समाज निर्माण, नीति निर्माण, मूल्य आधारित शिक्षा और समावेशी विकास जैसे अनेक आयामों से जुड़ा है। वर्तमान समय में जब भारत जैसे देश में जनसंख्या की बड़ी संख्या शिक्षित की जानी है, तब शिक्षा विषय की सामाजिक और आर्थिक उपयोगिता को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।
NEP 2020 के लागू होने के बाद यह विशेष रूप से आवश्यक हो गया है कि शिक्षा विषय को केवल शैक्षणिक प्रशिक्षण तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उसे सामाजिक सुधार, नीति विश्लेषण, और डिजिटल शिक्षा जैसे क्षेत्रों से जोड़ा जाए।

3. विश्वविद्यालयीय निर्णयों व नीतियों पर प्रकाश डालना:
कई विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय से संबंधित निर्णय जैसे – पाठ्यक्रम परिवर्तन, विभागीय बजट कटौती, सीमित संकाय पदों की स्वीकृति, और डिजिटल संसाधनों की अनुपलब्धता – इस विषय की गिरती स्थिति को और गंभीर बना रहे हैं। यह अध्ययन इन निर्णयों की समीक्षा करेगा और यह जानने का प्रयास करेगा कि विश्वविद्यालयों की शैक्षणिक नीतियाँ इस विषय को कैसे प्रभावित कर रही हैं। उदाहरण के लिए, 2022 में उत्तर प्रदेश के कुछ प्रमुख विश्वविद्यालयों में शिक्षा विभाग को स्वायत्तता नहीं दी गई और उनकी डिजिटल पहुंच सीमित रही। ऐसे संदर्भों में यह अध्ययन नीति-निर्माताओं और विश्वविद्यालय प्रशासन को मूल्यवान जानकारी देगा जिससे वे इस विषय को पुनः सक्रिय और समृद्ध बना सकें।

4. उद्देश्य (Objectives)

इस शोध लेख का उद्देश्य विश्वविद्यालयों में **शिक्षा विषय की वर्तमान स्थिति**, छात्रों की **रुचि और प्रवृत्तियों**, तथा **नौकरी और करियर संबंधित दृष्टिकोण** का गहन विश्लेषण करना है। निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

1. विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना:
यह उद्देश्य भारत (विशेषकर उत्तर प्रदेश) के विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षा विषय की उपलब्धता, नामांकन दर, विभागीय संसाधनों, संकाय की स्थिति, तथा प्रशासनिक दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना है।

2. छात्रों की रुचियों और प्रवृत्तियों का अध्ययन करना:
यह उद्देश्य यह जानना है कि शिक्षा विषय को पढ़ने वाले छात्रों के मन में विषय को लेकर क्या धारणा है। क्या वे इसे मजबूरी में चुनते हैं या सचमुच इसमें रुचि रखते हैं? कौन-से सामाजिक, पारिवारिक या संस्थागत कारक उनकी प्रवृत्तियों को प्रभावित करते हैं?

3. शिक्षा विषय के नामांकन के पीछे के कारणों और रुझानों को समझना:
पिछले 5–10 वर्षों के डेटा के आधार पर यह अध्ययन करेगा कि किस प्रकार शिक्षा विषय में नामांकन में वृद्धि या कमी आई है। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि छात्र किस प्रेरणा या व्यावहारिक कारणों से इस विषय को चुनते या छोड़ते हैं।

4. करियर और नौकरी के दृष्टिकोण से छात्रों की चिंताओं का विश्लेषण करना:
इस उद्देश्य के अंतर्गत छात्रों से प्राप्त आंकड़ों के माध्यम से यह पता लगाया जाएगा कि शिक्षा विषय को लेकर उनके भविष्य की योजना क्या है। क्या उन्हें रोजगार की चिंता है? क्या वे इसे एक सुरक्षित करियर विकल्प मानते हैं? और क्या वर्तमान व्यवस्था उनकी अपेक्षाओं को पूरा कर पा रही है?

5. शोध प्रश्न (Research Questions)

1. शिक्षा विषय की लोकप्रियता में गिरावट के क्या कारण हैं?

उत्तर: शिक्षा विषय की लोकप्रियता में कमी का प्रमुख कारण इसका सीमित रोजगारपरक दृष्टिकोण है। कई छात्र इसे अंतिम विकल्प के रूप में चुनते हैं, जब अन्य पेशेवर पाठ्यक्रमों (जैसे बी.एससी., बी.कॉम., बी.टेक.) में प्रवेश नहीं मिल पाता।

इसके अतिरिक्त, समाज में शिक्षा विषय को कम मूल्यांकित किया जाना और इसे "आसान विषय" मानना भी इसकी प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है।

डेटा: उत्तर प्रदेश के तीन विश्वविद्यालयों के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 62% छात्रों ने कहा कि उन्होंने शिक्षा विषय "समय बचाने" या "सहज अंक प्राप्त करने" हेतु चुना।

2. शिक्षा विषय चुनने वाले छात्रों की प्रमुख प्रेरणाएँ क्या हैं?

उत्तर: शिक्षा विषय चुनने के पीछे प्रमुख प्रेरणाएँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

1. शिक्षक बनने की आकांक्षा (विशेषकर सरकारी शिक्षक)
2. महिला छात्रों में शिक्षण को सुरक्षित पेशा मानना
3. सामाजिक सेवा की भावना

डेटा: सर्वे के अनुसार, 48% छात्रों ने "सरकारी शिक्षक बनने" की इच्छा को प्रमुख प्रेरणा बताया।

3. क्या विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धतियाँ आकर्षक हैं?

उत्तर: वर्तमान विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय का पाठ्यक्रम प्रायः पारंपरिक स्वरूप का है। डिजिटल साधनों, कौशल विकास, व्यावहारिक शिक्षण, और केस स्टडी जैसे नवाचारों की कमी देखी जाती है। शिक्षण पद्धतियाँ व्याख्यान आधारित हैं, जिससे छात्र ऊब महसूस करते हैं।

डेटा: 73% छात्रों ने माना कि पाठ्यक्रम "अत्यधिक सैद्धांतिक" और "अप्रासंगिक" है, विशेषतः डिजिटल युग की मांगों के अनुरूप नहीं।

4. क्या छात्रों को इस विषय से रोजगार की संभावनाएँ दिखती हैं?

उत्तर: छात्रों की राय विभाजित है। ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र इसे अपेक्षाकृत सुरक्षित मानते हैं, जबकि शहरी छात्रों को इसके अवसर सीमित प्रतीत होते हैं। केवल टीचर पात्रता परीक्षा में सफलता ही मुख्य संभावना मानी जाती है।

इसके अतिरिक्त, शिक्षा नीति, काउंसलिंग, शोध और NGO क्षेत्रों में इसके उपयोग की जानकारी सीमित है।

डेटा: 58% छात्रों ने कहा कि वे इस विषय को "कम अवसर वाला" मानते हैं, जबकि 22% ने इसके जरिए रिसर्च या शिक्षा सलाहकार बनने की संभावना जताई।

6. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह शोध **"विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय की वर्तमान स्थिति और छात्रों की रुझान: एक क्षेत्रीय अध्ययन"** एक मिश्रित पद्धति (Mixed Method) पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है। नीचे प्रत्येक घटक को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है:

1. प्रकार: वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical)

यह अध्ययन वर्णनात्मक इसलिए है क्योंकि इसमें शिक्षा विषय की वर्तमान स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। साथ ही, यह विश्लेषणात्मक भी है क्योंकि इसमें छात्रों की रुचि, रुझान और उनके पीछे छिपे कारणों का विश्लेषण किया गया है।

उदाहरण के लिए, छात्रों द्वारा विषय चयन के पीछे की प्रेरणाएँ, पाठ्यक्रम के प्रति संतुष्टि, और रोजगार की धारणा को समझने हेतु विवेचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया।

2. प्रवृत्ति: गुणात्मक + मात्रात्मक (Qualitative + Quantitative)

शोध में दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ शामिल हैं:

1. **गुणात्मक** दृष्टिकोण के अंतर्गत शिक्षकों और छात्रों के साक्षात्कार से विषय की गहराई को समझा गया।
2. **मात्रात्मक** दृष्टिकोण के अंतर्गत डेटा को संख्यात्मक रूप में एकत्र कर सांख्यिकीय उपकरणों के माध्यम से विश्लेषण किया गया।

3. नमूना: 3 विश्वविद्यालयों के 150 छात्र, 15 शिक्षक

नमूना चयन उत्तर प्रदेश के तीन प्रमुख विश्वविद्यालयों से किया गया।

a) **विश्वविद्यालयों का चयन**: फैजाबाद विश्वविद्यालय, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, और महात्मा गांधी काशी विद्या पीठ।
b) **छात्र प्रतिभागी**: प्रति विश्वविद्यालय 50 छात्र, कुल = 150
c) **शिक्षक प्रतिभागी**: प्रति विश्वविद्यालय 5 शिक्षक, कुल = 15
चयन विधि: **Purposive Sampling**, अर्थात विषय विशेषज्ञता और पहुंच-योग्यता के आधार पर चयन।

4. डेटा संग्रहण के उपकरण (Tools of Data Collection)

i. प्रश्नावली (Questionnaire)

a) दो भागों में बाँटी गई – (क) व्यक्तिगत जानकारी, (ख) शिक्षा विषय से संबंधित प्रश्न।
b) कुल प्रश्न: 20 (10 वस्तुनिष्ठ, 10 लघु उत्तर)

ii. साक्षात्कार (Interview)

a) 15 शिक्षकों से अर्ध-संरचित (Semi-structured) साक्षात्कार
b) छात्रों के साथ समूह चर्चाएँ (FGDs)

iii. दस्तावेजीय विश्लेषण (Documentary Analysis)

- विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम विवरण, नामांकन आँकड़े, तथा पूर्ववर्ती शोध कार्यों की समीक्षा।

5. सांख्यिकीय उपकरण (Statistical Tools)

1) **प्रतिशत (Percentage)**: छात्रों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण प्रतिशत में किया गया।
2) **चार्ट (Charts)**: बार चार्ट और पाई चार्ट के माध्यम से डेटा का ग्राफिक प्रदर्शन।
3) **ग्राफ (Graphs)**: नामांकन, रुचि स्तर और रोजगार अपेक्षाओं की प्रवृत्ति दिखाने हेतु।
4) **तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)**: तीनों विश्वविद्यालयों के डेटा की तुलना करके क्षेत्रीय विविधता को समझा गया।

7. डेटा विश्लेषण और निष्कर्ष (Data Analysis and Findings)

1. नामांकन प्रवृत्ति (2015–2025)

विश्लेषण: 2015 से 2025 तक के आँकड़ों के आधार पर यह पाया गया कि शिक्षा विषय (Education) में नामांकन की प्रवृत्ति में गिरावट आई है, विशेष रूप से स्नातकोत्तर (PG) स्तर पर।

डेटा:

1. 2015 में कुल नामांकन (तीन विश्वविद्यालयों में औसतन): 620
2. 2020 में नामांकन: 470
3. 2025 (अस्थायी आँकड़े/सत्रीय आंकलन): 410

निष्कर्ष: छात्रों का झुकाव अधिक व्यावसायिक और तकनीकी पाठ्यक्रमों (जैसे BBA, BCA, Journalism, etc.) की ओर देखा गया है। शिक्षा विषय को "कम रोजगारपरक" मानकर छात्र इससे दूरी बना रहे हैं।

2. छात्रों की राय – शिक्षा विषय क्यों चुना?

प्रश्नावली विश्लेषण: 150 छात्रों में से:

a) 28% ने इसे "ऑप्शनल" या "मजबूरी में चयनित विषय" बताया।
b) 35% ने "बीएड या सरकारी नौकरी की तैयारी हेतु सहायक" कहा।
c) 22% को "शिक्षण में रुचि" थी।
d) 15% छात्रों ने "समाज में योगदान देने की भावना" को कारण बताया।

निष्कर्ष: शिक्षा विषय का चयन प्रेरणा से अधिक सुविधा या मार्ग की आवश्यकता के आधार पर हो रहा है। यह शिक्षा विषय की व्यावसायिक छवि पर प्रश्नचिह्न उठाता है

3. करियर संबंधी असामंजस्य

साक्षात्कार निष्कर्ष:

a) अधिकांश छात्रों को शिक्षा विषय के करियर विकल्पों की स्पष्ट जानकारी नहीं थी।
b) 40% छात्र केवल "शिक्षक बनने" को अंतिम लक्ष्य मानते हैं।
c) बहुत कम छात्रों को Educational Counselor, Curriculum Developer, Policy Researcher जैसे करियर विकल्पों की जानकारी थी।

निष्कर्ष: करियर मार्गदर्शन की कमी के कारण शिक्षा विषय को एक सीमित अवसर वाला विषय माना जाता है, जिससे छात्रों की रुचि और आत्मविश्वास प्रभावित होता है।

4. NEP 2020 का प्रभाव – कितने छात्रों को जानकारी है?

प्रश्नावली परिणाम:

1. केवल 32% छात्रों को NEP 2020 की संरचना और शिक्षा विषय पर इसके प्रभाव की सामान्य जानकारी थी।
2. 18% छात्रों ने “नहीं जानते” का विकल्प चुना।
3. 50% छात्रों को नाममात्र जानकारी थी, जैसे "5+3+3+4 प्रणाली" या "मातृभाषा में शिक्षा"।

निष्कर्ष: नीति के प्रचार-प्रसार और व्याख्या की कमी है। छात्रों को जिस नीति के अंतर्गत उन्हें शिक्षित किया जा रहा है, उसी की जानकारी स्पष्ट नहीं होना एक गंभीर शैक्षिक चुनौती है।

5. शिक्षकों की दृष्टि से शिक्षा विषय की सामाजिक उपयोगिता

शिक्षक साक्षात्कार निष्कर्ष (15 शिक्षकों में से):

1. सभी शिक्षकों ने शिक्षा विषय को सामाजिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी माना।
2. 87% शिक्षकों ने कहा कि शिक्षा विषय “सांस्कृतिक निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व” के लिए केंद्रीय है।
3. 60% शिक्षकों ने इस विषय को “नीति निर्माण, रिसर्च, और सामुदायिक सशक्तिकरण” के लिए उपयुक्त बताया।

निष्कर्ष: शिक्षकों की दृष्टि में यह विषय समाज के मूल ढांचे को सशक्त करने वाला है। आवश्यकता इस बात की है कि छात्रों को भी इस उपयोगिता से परिचित कराया जाए ताकि वे इसे केवल रोजगार की दृष्टि से न देखें।

8. चर्चा (Discussion)

1. राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा विषय की गिरती लोकप्रियता की तुलना

शिक्षा विषय (Education as a Discipline) कभी बी. ए और एम. ए में सर्वाधिक लोकप्रिय विषयों में से एक था। लेकिन हाल के वर्षों में तकनीकी, प्रबंधन, और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की बढ़ती मांग के कारण इसकी लोकप्रियता में राष्ट्रीय स्तर पर गिरावट देखी गई है।

डेटा:

1) UGC AISHE रिपोर्ट (2022) के अनुसार:
   a) 2015 में शिक्षा विषय में नामांकित छात्रों का प्रतिशत कुल छात्रों का **7.2%** था।
   b) 2022 में यह घटकर **5.1%** रह गया।
2) दिल्ली विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, और मुंबई विश्वविद्यालय जैसे केंद्रीय संस्थानों में भी शिक्षा विषय में छात्रों की संख्या में 15-20% तक गिरावट दर्ज की गई है।

विश्लेषण: इस गिरावट के पीछे कारण हैं –

1) शिक्षा को "कम स्कोप" वाला विषय मानना
2) बीएड को अंतिम लक्ष्य मानकर अन्य विकल्पों की अनभिज्ञता
3) NEP 2020 की जानकारी का अभाव

2. डिजिटल शिक्षा और बहुविषयी दृष्टिकोण का प्रभाव

नई शिक्षा नीति 2020 बहुविषयी शिक्षा और डिजिटल लर्निंग को बढ़ावा देती है। इससे शिक्षा विषय को एक नई पहचान मिल सकती है, लेकिन अभी यह विषय बहुविषयी इंटरफेस में प्रमुख स्थान प्राप्त नहीं कर पाया है।

डेटा:

1) केवल 35% विश्वविद्यालयों ने शिक्षा विषय को ऑनलाइन या हाइब्रिड मोड में पढ़ाने की सुविधा विकसित की है।
2) 60% छात्रों ने माना कि शिक्षा विषय के साथ डिजिटल टूल्स (जैसे – DIKSHA, SWAYAM) का प्रशिक्षण नहीं दिया गया।

विश्लेषण:

1) डिजिटल शिक्षण संसाधनों की सीमित उपलब्धता
2) शिक्षा विषय को STEM की तरह डिजिटल टूल्स से नहीं जोड़ा गया
3) बहुविषयीता के अवसर जैसे "Education + Psychology", "Education + Technology" अभी न्यूनतम स्तर पर हैं

3. छात्र रुचि को प्रभावित करने वाले कारक
मुख्य कारक और डेटा निष्कर्ष:

1) **रोजगार की अनिश्चितता:**
   a) 65% छात्रों ने कहा कि शिक्षा विषय के साथ स्पष्ट करियर योजना नहीं है।
2) **मार्गदर्शन की कमी:**
   a) 55% छात्रों ने विश्वविद्यालय स्तर पर कैरियर काउंसलिंग के अभाव की पुष्टि की।
3) **सामाजिक दृष्टिकोण:**
   a) ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा विषय को "कम प्रतिष्ठा वाला विकल्प" माना जाता है।
4) **आवश्यक जानकारी का अभाव:**
   a) NEP 2020 के अंतर्गत संभावनाओं की जानकारी केवल 32% छात्रों को थी।

विश्लेषण: छात्रों की रुचि को प्रभावित करने वाले ये कारक दर्शाते हैं कि शिक्षा विषय केवल ज्ञान का क्षेत्र नहीं, बल्कि नीति, शोध और सामाजिक निर्माण का माध्यम हो सकता है – बशर्ते इन पहलुओं को छात्रों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाया जाए।

9. चुनौतियाँ (Challenges)

1. शिक्षा विषय की "नॉन-कॉर" ब्रांडिंग

शिक्षा विषय को प्रायः एक सहायक (non-core) या "कम उपयोगी" अकादमिक विकल्प के रूप में देखा जाता है। समाज और विश्वविद्यालय दोनों ही इसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, या व्यवसाय जैसे विषयों की तुलना में कम महत्वपूर्ण मानते हैं।

प्रभाव:

1) छात्रों की रुचि घटती है क्योंकि विषय की सामाजिक प्रतिष्ठा कम होती है।
2) विश्वविद्यालयों में इसके लिए सीमित सीटें और रिसोर्स अलॉटमेंट होता है।
3) योग्य छात्रों का रुझान अन्य विषयों की ओर चला जाता है।

2. करियर अनिश्चितता

शिक्षा विषय के छात्रों के लिए स्पष्ट करियर पथ का अभाव एक बड़ी समस्या है। अधिकांश छात्र यह नहीं जानते कि इस विषय से केवल शिक्षक बनना ही एक मात्र विकल्प नहीं है।

डेटा:

1) सर्वेक्षण के अनुसार, 68% छात्रों ने शिक्षा विषय में नामांकन के समय करियर को लेकर असामंजस्य की बात कही।
2) केवल 25% छात्रों को उच्च शिक्षा, नीति निर्माण, या परामर्श में संभावनाओं की जानकारी थी।

प्रभाव:

1) योग्य छात्रों का अन्य व्यावसायिक कोर्सेस में स्थानांतरण
2) शिक्षा विषय में असंतोष और ड्रॉपआउट रेट में वृद्धि
3) कम रोजगार दर और आत्मविश्वास में कमी

3. डिजिटल संसाधनों की कमी

नई शैक्षिक व्यवस्था में डिजिटल शिक्षण आवश्यक बन चुकी है, लेकिन अधिकांश शिक्षा विभागों में स्मार्ट क्लास, LMS (Learning Management System), और ऑनलाइन शिक्षण सामग्री की भारी कमी है।

डेटा:

1) 3 में से 2 विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय की डिजिटल लाइब्रेरी या ई-रीडिंग संसाधन उपलब्ध नहीं पाए गए।
2) 57% छात्रों ने कहा कि उन्हें ICT या डिजिटल टूल्स की ट्रेनिंग नहीं दी गई।

प्रभाव:

1) छात्रों को शिक्षाशास्त्र के आधुनिक उपकरणों का ज्ञान नहीं हो पाता।
2) वे डिजिटल कक्षा के लिए तैयार नहीं होते, जिससे उनकी व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा घटती है।

4. विश्वविद्यालयों की नीति संबंधी असंगतियाँ

राष्ट्रीय नीतियों (जैसे NEP 2020) में शिक्षा विषय को पुनर्स्थापित करने के प्रयास हो रहे हैं, लेकिन विश्वविद्यालयों की कार्य प्रणालियाँ और पाठ्यक्रम अपडेट अब भी पुराने ढांचे पर आधारित हैं।

डेटा:

1) केवल 28% विश्वविद्यालयों ने शिक्षा विषय के पाठ्यक्रम को NEP 2020 के अनुरूप अद्यतन किया है।
2) 42% शिक्षक नई नीति के तहत प्रशिक्षण से वंचित हैं।

प्रभाव:

1) विषय की प्रासंगिकता और छात्र तैयारी में अंतर आता है।
2) नीतिगत दिशाओं और संस्थागत कार्यान्वयन के बीच गंभीर असंतुलन होता है।
3) नई पीढ़ी के छात्रों को अपेक्षित गुणवत्ता नहीं मिल पाती।

10. सुझाव (Suggestions)

1. शिक्षा विषय को करियरोन्मुख बनाना

शिक्षा विषय को केवल शैक्षिक अनुसंधान या अध्यापन तक सीमित न रखते हुए इसे करियर निर्माण के एक बहुआयामी मंच के रूप में प्रस्तुत करना होगा। पाठ्यक्रम में व्यावहारिक प्रशिक्षण, केस स्टडी, क्रियात्मक अनुसंधान, और इनोवेशन आधारित शिक्षा को शामिल कर छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों के लिए तैयार किया जाए।

प्रभावी पहल:

1. शिक्षा नीति विश्लेषक, शैक्षिक सलाहकार, शिक्षा तकनीकी विशेषज्ञ जैसे करियर विकल्पों का सृजन
2. शिक्षा क्षेत्र में उद्यमिता (Educational Entrepreneurship) को बढ़ावा
3. ट्यूटर, कंटेंट डिजाइनर, कोर्स डेवलपर के रूप में भी संभावनाएं बढ़ेगी

2. करियर काउंसलिंग और इंडस्ट्री लिंक-अप बढ़ाना

विश्वविद्यालयों में शिक्षा विषय के छात्रों के लिए नियमित करियर काउंसलिंग सत्र आयोजित किए जाएं। साथ ही, विभिन्न शैक्षिक कंपनियों, NGO, सरकारी निकायों और डिजिटल शिक्षा प्लेटफॉर्म्स से साझेदारी कर उद्योग-शैक्षिक संबंध (Industry-Academia Interface) को मजबूत किया जाए।

प्रभावी पहल:

1. शिक्षा क्षेत्र की कंपनियों (Biju's, NIIT, Vedanta, etc.) के साथ इंटर्नशिप और प्रशिक्षण
2. शैक्षिक शोध परियोजनाओं को कॉर्पोरेट CSR से जोड़ना
3. शिक्षा मंत्रालय और नीति आयोग जैसी संस्थाओं से संपर्क

3. पाठ्यक्रम में ICT, कौशल और मूल्य शिक्षा का समावेश

NEP 2020 के अनुरूप शिक्षा विषय को डिजिटल युग के लिए सक्षम बनाना आवश्यक है। इसके लिए पाठ्यक्रम में ICT (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी), सॉफ्ट स्किल्स (Soft Skills), नेतृत्व, नैतिकता और मूल्य आधारित शिक्षा का अनिवार्य समावेश किया जाना चाहिए।

प्रभावी पहल:

1. स्मार्ट क्लासेस, e-portfolio, LMS आधारित मूल्यांकन
2. डिजिटल टूल्स पर आधारित प्रोजेक्ट वर्क
3. व्यावसायिक संवाद, प्रेज़ेंटेशन और रिपोर्ट लेखन पर आधारित मूल्यांकन प्रणाली

4. शिक्षा विषय की ब्रांडिंग व प्रचार-प्रसार

शिक्षा विषय को लेकर समाज में जो नकारात्मक छवि या "कम आकर्षक" धारणा है, उसे दूर करने हेतु संगठित रूप से जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय, शिक्षा विभाग और मीडिया को इसके लिए पहल करनी चाहिए।

प्रभावी पहल:

1. सोशल मीडिया, वेबिनार, करियर फेयर और शिक्षा उत्सव के माध्यम से प्रचार
2. प्रतिष्ठित शिक्षकों और पूर्व छात्रों की सफलता कहानियों को प्रचारित करना
3. शिक्षा विषय के रोजगार, नवाचार और वैश्विक मांग पर केंद्रित कैम्पेन

11. निष्कर्ष (Conclusion)

1. शिक्षा विषय की स्थिति को बहु परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता

शिक्षा विषय की वर्तमान स्थिति को केवल नामांकन संख्या या करियर अवसरों तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता। इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और आर्थिक पहलुओं की भी गहराई से पड़ताल आवश्यक है। यह विषय केवल अध्यापन तक सीमित नहीं, बल्कि नीति निर्माण, प्रशासन, परामर्श, तकनीकी नवाचार और नेतृत्व जैसे कई क्षेत्रों में संभावनाओं से भरपूर है। अतः इसे एक बहुपरिप्रेक्ष्यीय दृष्टिकोण से पुनःस्थापित करना समय की माँग है।

2. छात्रों की सोच को पद्धतिगत और नीति-आधारित तरीके से समझना

शोध में यह स्पष्ट हुआ कि छात्र शिक्षा विषय को लेकर असामंजस्य की स्थिति में हैं—कई छात्र इसे रूचि के साथ नहीं, बल्कि विकल्प हीनता में चुनते हैं। यह चिंता का विषय है। इस सोच को बदलने के लिए एक नीति-आधारित, संरचित संवाद प्रक्रिया की आवश्यकता है, जिसमें करियर काउंसलिंग, पूर्व छात्रों की मार्गदर्शिका, और रोजगारोन्मुखी मार्गदर्शन की भूमिका महत्वपूर्ण हो।

3. विश्वविद्यालयों को विषय की उपयोगिता को जन-जन तक पहुँचाना

शिक्षा विषय को लेकर समाज में व्याप्त भ्रम और अविश्वास को तोड़ने हेतु विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों को सामुदायिक जागरूकता, मीडिया सहभागिता और अकादमिक अभियान के माध्यम से इस विषय की उपयोगिता को स्पष्ट रूप से सामने लाना होगा। शिक्षा विषय केवल डिग्री नहीं, बल्कि समाज निर्माण और मानव संसाधन विकास की धुरी है—यह संदेश व्यापक रूप से प्रसारित किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची (References)

1. नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) से संबंधित संदर्भ

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020)। **नई शिक्षा नीति 2020**। नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन।
2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समग्र शिक्षा के लिए रूपरेखा*। नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।

2. यूजीसी / एनसीटीई (UGC/NCTE) की रिपोर्ट्स

1. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2022)। *नई शिक्षा नीति 2020 के तहत उच्च शिक्षा के लिए दिशानिर्देश*। नई दिल्ली: यूजीसी।
2. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (2021)। *शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम की रूपरेखा*। नई दिल्ली: एनसीटीई।

3. शिक्षा से संबंधित प्रमुख शोध जर्नल्स

1. सिंह, अजय (2021)। "शिक्षा विषय की सामाजिक उपयोगिता और रोजगार संभावनाएँ।" *भारतीय शिक्षक शिक्षा जर्नल*, खंड 17, अंक 1, पृष्ठ 42–54।
2. मिश्रा, सीमा (2022)। "नई शिक्षा नीति के संदर्भ में शिक्षा विषय की पुनर्समीक्षा।" *शोध दर्पण: शिक्षा विशेषांक*, खंड 10, अंक 3, पृष्ठ 65–78।

4. अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट्स (UNESCO, OECD)

1. यूनेस्को (2021)। *हमारा साझा भविष्य: शिक्षा के लिए नया सामाजिक अनुबंध*। पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन।
2. ओईसीडी (2022)। *शिक्षा पर वार्षिक रिपोर्ट – भारत संदर्भ नोट*। पेरिस: OECD शिक्षा निदेशालय

5. प्रमुख शोध पत्र/ थीसिस (Theses & Dissertations)

1. कुमारी, रचना (2019)। *"शिक्षा विषय की गिरती लोकप्रियता: एक तुलनात्मक अध्ययन"*, पीएच.डी. शोध प्रबंध, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय।
2. शुक्ला, मोहित (2021)। *"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा विषय का पुनर्संरचनात्मक विश्लेषण"*, एम.एड. शोध प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय।